इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम

से मुतअ़ल्लिक़

चौदह (१४) सवालात

जिल्द २

नामे किताब : इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़
चौदह (१४) सवालात – जिल्द २

तर्जुमा : एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.)

नाशिर : एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.)

सने इशाअ़त : १४३७ हि.

हदिया : ३० रुपये

फ़ेहरिस्त

इब्तेदाइया.....५

सवाल १

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वजूद से मुतअ़ल्लिक शक-ओ-शुब्हात ख़त्म करने के लिए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम क़ुरआन में क्यों बयान नहीं हुआ? ८

सवाल २

क्या इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का अस़ली नाम ग़ैबत के ज़माने में लेना जाएज़ है? ११

सवाल ३

क्यों इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के बेटे हैं इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम के नहीं? १५

सवाल ४

कैसे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम पाँच साल की उ़म्र में रहबरी और इमामत की पूरी स़लाह़ियत रखते हैं? २०

सवाल ५

क्या क्या मोअ्जेज़ात और करामतें इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से स़ादिर हुई हैं? २३

सवाल ६

क्या पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने ग़ैबत के बारे में पहले से ख़बर दी थी? २७

सवाल ७

ग़ैबते सुग़रा और ग़ैबते कुबरा का क्या मअ्ना है और उसका आग़ाज़ कब हुआ? २९

सवाल ८

ग़ैबते कुबरा पर ग़ैबते सुग़रा का क्या असर और नक़्श है?.....३१

सवाल ९

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत की वजह क्या है? ३३

सवाल १०

क्या ज़िद है कि इमामे मअ़्सूम सिर्फ़ बारह हों ताकि ज़रूरत हो कि अल्लाह क़ानूने त़बीअ़त को बारहवें इमाम के लिए तोड़ दे?.....३७

सवाल ११

क्या ह़र्ज था कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम आख़री ज़माने में पैदा होते ताकि ग़ैबत की ज़रूरत न होती? ४२

सवाल १२

क्या ह़र्ज था कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ग़ाएब न होते और अल्लाह तआ़ला क़त्ल होने से उनकी ह़ेफ़ाज़त करता? ४३

सवाल १३

इमाम ग़ाएब, मुसलमानों के लिए क्या फ़ाएदेमंद हो सकता है? कहा जाता है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी एक इन्फ़ेरादी और ख़ुसूसी ज़िन्दगी है जब कि एक रहबर और पेशवा को लोगों और मुसलमानों के दरमियान होना चाहिए। ऐसी ह़ालत में हमें सवाल करने का ह़क़ है कि येह ग़ाएब इमाम लोगों के लिए क्या फ़ाएदा पहुँचा सकता है? ४४

सवाल १४

क्यों इमामे ग़ाएब की तशबीह उस सूरज से दी गई है जो बादल के पीछे छिपा होता है? ४८

इब्तेदाइया

मोहतसिब और मोअ़्तरिज़ अज़हान के लोगों की कसरत है। इसमें बड़े बड़े शहसवाराने तहरीर-ओ-तकरीर भी हैं। मुतवस्सित़ दर्जे के वोह लोग भी हैं जो क़लमकार हैं और अपनी अ़क़्ल भर सोच बिचार की रोशनी में फ़ैस़ला कर लेते हैं। और एक बड़ी जमाअ़त उन लोगों की है जो अपने अफ़्कार के ज़ावियों की तश्कीलात में हमा वक़्त मस़रूफ़ रहते हैं और बात़िल की तब्लीग़ात से बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हैं। और हर शीशे के तराशे हुए नगीने को हीरा साबित करने में अपना पूरा ज़ोर लगाते हैं लेकिन बयाबान के गुम गश्ता राह को कभी मंज़िल नस़ीब नहीं होती और बौखलाहट या ह़ैरानी के अ़लावा उनके हाथ कुछ नहीं आता इसी त़रह़ अव्वलुज़्ज़िक्र गरोह भी ह़क़ीक़त और ह़क़ से दूर होते चले जाते हैं।

ज़रा देखिये तो सही इब्ने ख़लदून को इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के बारे में इस लिए इश्काल है कि आप अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र स़ह़ीह़ बुख़ारी में नहीं हैं जबकि रेसालत मआब स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की पेशीनगोई पर जमहूरे इस्लाम का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि आप स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बारह जानशीन होंगे और वोह सब के सब औलादे फ़ात़ेमा से होंगे और बारहवाँ जानशीन महदी अ़लैहिस्सलाम होंगे जो इस दुनिया को अ़द्ल-ओ-इन्स़ाफ़ से इस त़रह़ भर देंगे जिस त़रह़ येह दुनिया ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी होगी। इस त़रह़ आख़री ज़माने की और भी अ़लामतें आँह़ज़रत स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने बयान फ़रमाई हैं। जलालुद्दीन सुयूत़ी ने इस पेशीनगोई के तह़त तो कमाल कर दिया। आप लिखते हैं उन बारह जानशीनाने पैग़म्बरे इस्लाम में चार ख़ुलफ़ाए राशेदा हैं, चार बनी

उमय्या से हैं और दो बनी अ़ब्बास से जबकि दो का इ़ल्म नहीं है। जब बारहवाँ जानशीन पैदा होगा तो वोह आख़री ज़माना होगा और वोह इस दुनिया को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देगा। एक और मशहूर ह़दीस जिस पर जमहूरे इस्लाम का इत्तेफ़ाक़ है और वोह येह कि जो अपने ज़माने के इमाम को पहचाने बग़ैर मर जाएगा वोह जेहालत की मौत मरेगा। ऐसी अह़ादीस-ओ-रवायात का झुठलाना तो मुश्किल अम्र है हाँ जिसे अटकल लगाना कहते है वोह तो मुम्किन भी है और आसान रास्ता भी है। या कम से कम बात़िल को ह़क़ साबित करने के लिए ज़ोर ज़ोर से ढोल तो पीट ही सकते हैं ताकि इस शोर-ओ-ग़ोग़ा में किसी मज़्लूम की फ़रियाद सुनाई न दे जो कहता है कहाँ है वोह फ़र्ज़न्दे रसूल स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम जो ज़ुल्म-ओ-जौर को जड़ से उखाड़ फेंकेगा। इस लिए कि येह नाला-ओ-फ़रियाद आख़री ज़माने के सितम ज़दगान, मुस्तमंदान के सरपरस्त हुज्जत इब्निल ह़सन के वजूदे अक़दस का पता देते हैं। यही नहीं बल्कि *"क़द तबय्येनर्रुश्दो मिनल ग़य्ये"* की तफ़सीर भी बयान करते हैं। अफ़सोस इस बात का है कि अग़यार से क़त़्अ नज़र अपनों के दरमियान से भी शक-ओ-शुब्हात का रंग लिए जुम्ले सुनाई देते हैं।

आईनए क़ल्ब पर पड़ी ऐसे शुकूक की गर्द को स़ाफ़ करने के लिए बिल्ख़ुसूस़ और मोअ़्तरेज़ीन के सवालात के जवाब देने के लिए बिल्उमूम इस किताब को लिखने की ज़रूरत को पूरा किया गया है ताकि हुज्जत तमाम हो जाए। इस पुर आशोब ज़माने में जहाँ फ़ित्ना-ओ-फ़साद, उ़र्यानी और बरहनगी के साथ हर मोड़ पर रक़्स़ाँ है उनसे दामनकश रहना और अपने नफ़्स को बचाए रखना उसके लिए मुम्किन-ओ-मुआ़विन साबित हो और रहबरे ह़क़ीक़ी जो इमामे वक़्त है उसकी मअ़्रेफ़त में कमी न आने पाए।

दुनिया की ज़िन्दगी चंद रोज़ा है। येह अपने माह-ओ-साल गुज़ार कर ख़त्म हो जाएगी लेकिन आख़ेरत में उसके अअ्माल का हिसाब होगा जिससे कोई नहीं बचेगा और यक़ीनन ख़ैर तो उसी के साथ होगा जिसके सर पर बक़ीयतुल्लाह की ख़ुशनूदी की चादर तनी होगी।

ऐ अल्लाह तबारक-ओ-तआला! वोह ज़ात जो तेरी आख़री हुज्जत है उस पर हमारे ईमान-ओ-ईक़ान को आख़री साँस तक क़ाएम रखना। आमीन, सुम्मा आमीन।

सवाल १

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वजूद से मुतअ़ल्लिक शक-ओ-शुब्हात ख़त्म करने के लिए इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम कुरआन में क्यों बयान नहीं हुआ?

जवाब:

कुरआन करीम इलाही शख़्सीयतों का बयान, तीन त़रीक़े से करता है और हर एक के लिए मस्लेहत के तहत ख़ास़ रविश अपनाता है कभी नाम और कभी तअ़्दाद और कभी स़ेफ़ात के ज़रीए़ पहचनवाता है।

अगरचे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम कुरआन में नहीं है लेकिन इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ख़ुस़ूस़ीयत और इमाम की हुकूमत के बारे में कुरआन ने अपना मौक़िफ़ पेश किया है कुरआन शख़्सीयतों के बयान के लिए आ़लमी मस्लेहतों का ख़याल रखता है कभी मस्लेहत तक़ाज़ा करती है कि स़िर्फ़ शख़्सीयतों के स़ेफ़ात बयान किए जाएँ जैसा कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के बारे में यही किया है इसलिए कि:

१. इस त़रह़ की हुकूमत तशकील देने के बारे में कभी तफ़स़ील से और कभी इशारों में बयान किया है सूरए तौबा और सूरए स़फ़ की जिन आयतों में इस्लाम के सारी दुनिया में फैलने की बशारत दी गई है जैसे *"लेयुज़्हेरोहू अ़लद्दीने कुल्लेही"* ताकि इसको सारे अदियान पर ज़ाहिर कर दे।

इशारा उसी हुकूमत के बारे में है क्यों कि मुफ़स्सेरीन कहते हैं कि इस आयत की जिसमें इस्लाम का परचम सारी दुनिया में बलंद होने की बात की गई है वअ्दा पूरा नहीं हुआ है।

इसके अ़लावा सूरए अम्बिया आयत १०५ में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

हमने ज़िक्र यअ़्नी कुरआन के बअ़्द ज़बूर में लिख दिया है कि ज़मीन के वारिस हमारे स़ालेह बंदे होंगे।

आयत हमें बशारत देती है कि स़ालेह ह़ज़रात ज़मीन के वारिस होंगे और आ़लमी हुकूमत की बागडोर

संभालेंगे तारीख़ इस बात पर इत्तेफ़ाक़ करती है की अल्लाह का येह वअ़्दा अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

२. अगर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का अस़्ल नाम नहीं लिया है तो एक मस़्लेह़त के तह़त है जो मअ़्रेफ़त रखने वाले और अह्ले फ़ज़्ल से पोशीदा नहीं है इसलिए की जिस वजह से इमाम अ़ली अ़लैहिस्सलाम का नाम नहीं लिया है उसी दलील से इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम नहीं लिया है। अगर उन अइम्मा का नाम लिया गया होता तो बद्र-ओ- ओह़ोद और हुनैन का दीरीना कीना दोबारा ज़िन्दा हो जाता। इसी वजह से अल्लाह तआ़ला ने कुरआन में इस बात को आ़म त़ौर से ज़िक्र किया है और फ़रमाया है:

"हमारे नेक बंदे ज़मीन के वारिस होंगे"

जनाबे लुक़मान और ज़ुलक़रनैन के नाम से मुस्तक़्बिल में आने वाले अफ़राद से मुक़ाएसा नहीं किया जा सकता है माज़ी के लोगों के बारे में ह़सद और कीना को भड़काया नहीं जा सकता है और न ही

मौक़अ् परस्त इससे फ़ाएदा उठा सकते हैं लेकिन मुस्तक़्बिल में आने वाले अफ़राद के बारे में येह ख़तरा पाया जाता है।

क्या आप सोचते हैं कि सिर्फ़ नाम लेने से मुश्किल हल हो जाएगी? क्या आप सोचते है कि अगर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम क़ुरआन में लिया गया होता तो क्या तूले तारीख़ में येह मुम्किन नहीं था कि ख़ुदग़र्ज़ और शोहरत के लिए भूके अफ़राद इससे सूए इस्तेफ़ादा करते या कुछ लोग अपने ख़ास़ मक़स़द के लिए इमाम के वजूद का इंकार करते? तारीख़ी तजरेबे से पता चलता है कि अगर इमाम का नाम क़ुरआन में स़राह़तन आता तो भी ऐसे ख़ुदग़र्ज़ अफ़राद और झूठे लोग मह्दवीयत का झूठा दअ्वा न करते और अपना नाम इमामे ज़माना और महदी मौऊ़द रखते ताकि बहती गंगा में हाथ धो लें और उनके नाम और लोगों के इन्तेज़ार की कैफ़ीयत से सूए इस्तेफ़ादा कर लें। क्या अल्लाह ने पैग़म्बर के नाम को इन्जील में बयान नहीं किया था? लेकिन मफ़ाद परस्त अफ़राद और गिरोहों ने इसका ग़लत इस्तेअ्माल किया है।

इस बेना पर (अहम मसअला) इमाम अ़लैहिस्सलाम की दूसरी ख़ुस़ूस़ीयत को बयान करना है ताकि वोह लोग जिनका दिल मअ्रेफ़त से पुर है उनको पहचानने के बअ्द वाक़ई और हक़ीक़ी इमाम में इम्तेयाज़ पैदा कर सकें।

सवाल २

क्या इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का अस़ली नाम ग़ैबत के ज़माने में लेना जाएज़ है?

जवाब:

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को इमाम की कुनियत या अल्क़ाब से याद करना मस्लन "हुज्जत, क़ाएम, महदी, स़ाहेबुज़्ज़मान अ़लैहिस्सलाम "वग़ैरह कहना यक़ीनन जाएज़ है इसमें कोई शक-ओ-तरद्दुद नहीं है लेकिन क्या इमाम का अस़ली नाम यअ़्नी 'म-ह़-म-द' स़राह़त से लिया जा सकता है या नहीं। उ़लमाए शीआ़ के दरमियान इख़्तेलाफ़ है।

लेकिन तह़क़ीक़ से पता चलता है कि इमाम अ़लैहिस्सलाम का मशहूर नाम लेना कई त़रह़ से तस़व्वुर हो सकता है।

१. किताबों में लिखना, उसके जाएज़ होने में कोई शक-ओ-शुब्हा नहीं हैं क्योंकि नाम लेने वाली दलीलें इसको मनअ़् नहीं करती हैं इसके अ़लावा हमेशा मुत्तक़ी और परहेज़गार उ़लमा, जनाब कुलैनी से लेकर अब तक येह रविश रही है कि उन्होंने अपनी अपनी किताबों में ख़ुद इमाम का नाम लिखा है और उन पर किसी ने भी एअ़्तेराज़ नहीं किया है।

२. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम इशारा और कनाया से लेना जैसे इमाम का नाम अल्लाह के रसूल का नाम है और इमाम अ़लैहिस्सलाम की कुनियत पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की कुनियत है येह भी जाएज़ है उसी दलील से जो इसके पहले गुज़र

चुकी है। इसके अ़लावा मोतअ़द्दिद रवायतें शीआ़ और सुन्नी तरीक़े से पाई जाती है जिनमें वज़ाह़त है कि:

"महदी अ़लैहिस्सलाम मेरे फ़र्ज़ंदों में हैं उनका नाम मेरा नाम और उनकी कुनियत मेरी कुनियत है।"[१]

येह बात याद रहे कि इन दो जगहों पर जाएज़ होना डर और ख़ौफ़ न होने की सूरत में है, क्योंकि डर और ख़ौफ़, उन अ़नावीन में से है जो हर जाएज़ के ह़राम होने का सबब क़रार पाते हैं।

३. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम दुआ़ओं और मुनाजातों में भी लेना ज़ाहिरन जाएज़ है।

४. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम मुआ़शरा वग़ैरह में दर्दे दिल बयान करने के उ़न्वान से, राज़दाराना अंदाज़ में लेना यक़ीनन जाएज़ है क्योंकि अस़ली नाम लेने से मनअ़् करने वाली दलीलें इससे मनअ़् नहीं करती हैं 'पस नाम लेने का जाएज़ होना और नाम न लेने के जाएज़ होने की दलीलें किसी और दलील से नहीं टकराएगी जबकि पैग़म्बर की एक ह़दीस के ज़िम्न में आया है कि:

"काफ़िर के अ़लावा उनके क़याम से पहले कोई अ़ल्नी त़ौर से उनका अस़ली नाम नहीं लेगा।"[२]

५. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम डर और ख़ौफ़ मस्लन दुश्मनों की नशिस्तों में जिनसे तक़य्या वाजिब है इस त़रह़ की जगहों पर लेना यक़ीनन ह़राम है और इसमें कोई इख़्तेलाफ़ नहीं है जैसा कि इसके ह़राम होने पर मुतअ़द्दिद रवायतें स़रीह़न वारिद हुई हैं।

---

[१] (कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, शैख़ स़दूक़, स़.२८६)

[२] (मुस्तदरकुल वसाएल, मिर्ज़ा हुसैन नूरी, जि.२, स़.३८०)

६. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम उन मजालिस और नशिस्तों में लेना जिनमें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ और तक़य्या नहीं है यही वोह जगह है जिसमें काफ़ी बह्स-ओ-गुफ़्तुगू हुई है। बअ़्ज़ फ़ुक़हा का कहना है कि मुतअ़द्दिद रवायतें मौजूद हैं जो इन जगहों पर भी नाम लेने को भी ह़राम क़रार देती हैं। उन रवायतों में से एक येह है कि इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"मेरे बअ़्द मेरा जानशीन मेरा बेटा ह़सन है, पस तुम एक के बअ़्द एक जानशीन के बअ़्द क्या करोगे? रावी कहता है: मैंने कहा: अल्लाह तआ़ला मुझे आप पर कुर्बान करे, क्यों? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: इसलिए कि तुम ज़ाती त़ौर पर इमाम को नहीं पहचानोगे और उनका नाम लेना तुम्हारे लिए जाएज़ नहीं होगा। रावी कहता है मैंने कहा: पस हम कैसे उनको याद करें? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: तुम कहो हुज्जते आले मोह़म्मद अ़लैहिमुस्सलाम।[१]

और ख़ुद इमाम अ़लैहिस्सलाम की तौक़ीअ़् में इमाम अ़लैहिस्सलाम से वारिद हुआ है:

"मलऊ़न मलऊ़न है वोह शख़्स जो मज्मअ़् में मेरा नाम ले"[२]

बअ़्ज़ फ़ुक़हा कहते हैं: इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का अस़ली नाम लेना तक़य्ये की जगह ह़राम है एक त़रफ़ ऐसी रवायतें मौजूद हैं जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के नाम लेने को जाएज़ क़रार देती है दोनों क़िस्मों की रवायतों के जमअ़् करने का तन्हा यही ज़रीआ़ है। दूसरी दलीलें भी पेश करते हैं जिनको मुलाह़ेज़ा करने के बअ़्द

---

[१] (उस़ूले काफी, शैख़ कुलैनी, स़.३२८)

[२] (बेहारुल अनवार, अ़ल्लामा मजलिसी, जि.५३, स़.१८४)

येह बात स़हीह़ लगती है। इस सिलसिले में शीओं के अ़ज़ीम आ़लिम अ़ली इब्ने ईसा इरबली फ़रमाते हैं: मेरा फ़त्वा इमाम के अस़ली नाम को लेने से मनअ़् करने में स़िर्फ़ तक़य्या के मौरिद में है लेकिन इस वक़्त इमाम का नाम लेने में कोई हर्ज नहीं है।[१]

पस गुज़श्ता बातों की रौशनी में कहा जा सकता है कि: इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का नाम लेना यअ़्नी मोह़म्मद इब्ने ह़सन अ़स्करी अ़लैहेमस्सलाम कहना इस ज़माने में जब तक़य्या ज़रूरी नहीं है, जाएज़ है। [२]

---

[१] (कशफ़ुल गुम्मा, अ़ल्लामा इरबली, जि.२, स़.५२०)

[२] (किताबे क़वाएदुल फ़िक़्हीया, जि.३, स़.१२४)

सवाल ३

क्यों इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के बेटे हैं इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम के नहीं?

जवाब:

इस्लामी रवायतों से जो बात यक़ीनी त़ौर से मअ़्लूम होती है वोह येह है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़ंदों में है जैसा कि हुज़ैफ़ा पैग़म्बरे अकरम से रवायत करते हैं कि पैग़म्बर ने फ़रमाया:

> **अगर दुनिया की उ़म्र में एक दिन से ज़्यादा बाक़ी न हो, अल्लाह तआ़ला उस दिन को त़ूलानी करेगा ताकि मेरी औलाद से मेरा हम नाम क़याम करे।**

सलमान ने अ़र्ज़ किया: आप के किस फ़र्ज़ंद से पैदा होगा? पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के शाने पर अपना हाथ रखकर फ़रमाया: इससे। इसके अ़लावा अबू वाएल कहते है: ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की त़रफ़ देखकर फ़रमाया:

> **येह मेरा बेटा सरदार-ओ-आक़ा है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इसको सरदार-ओ-आक़ा नाम रखा है इसकी पुश्त से पैग़म्बर का हम नाम और पैग़म्बर के शबीहे अख़्लाक़ और किरदार में पैदा होगा जब लोग ग़ाफ़िल होंगे और ह़क़ नापैद हो चुका होगा और ज़ुल्म-ओ-सितम का बोल बाला होगा तो**

वोह ज़हूर करेगा और अल्लाह की क़सम अगर क़याम न करे और 'हाथ में तलवार न ले' तो लोग उसे क़त्ल कर देंगे। उनके ज़हूर से आसमान के लोग ख़ुश होंगे और वोह ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देगा जब कि वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी होगी।[१]

कुछ और रवायतें भी हैं जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वजूद को इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़ंदों में क़रार देती हैं मस्लन इसी ह़दीसे अमीरुल मोअ्मेनीन में इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के बजाए इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम का नाम लिया गया है लेकिन येह बईद नहीं है कि जिन ह़दीसों में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वजूद को इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम की औलाद में क़रार दिया है वोह झूठी हों। क्योंकि जिन झूठे सियासी अस्बाब की बेना पर बनी अब्बास ने ह़दीस गढ़ लिया कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम बनी अब्बास से है वही झूठे सबब इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम की औलाद में क़रार देने में भी पाएँ जाते हैं। उन्हीं अस्बाब में से एक सबब येह था कि इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़ंदों ने हुकूमत बनाने के लिए इस नाम को इस्तेअ्माल किया। क्या दलील है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की औलाद में हैं न कि इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम की औलाद में, और क्यों इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम की औलाद में कोई इमाम नहीं हुआ? रवायतों और दलीलों से उन नेकात को निकालकर बयान किया जा सकता है इस बात के मद्दे नज़र कि येह मसअला अल्लाह की मस्लेह़तों में से है जैसा कि इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम ने एक सवाल के जवाब में फ़रमाया:

---

[१] (किताबुल ग़ैबा, शैख़ तूसी, स़.११६)

इसलिए अल्लाह ने चाहा कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की औलाद में हो और इमाम ह़सन की औलाद में न हो अल्लाह तआ़ला जो अंजाम देता है उस सिलसिले में कोई कभी भी सवाल नहीं कर सकता है।[१]

दूसरी रवायत में इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने जनाब मूसा-ओ-हारून की ह़ालत के बारे में इशारा किया और इस मसअले को उस मसअले के मानिन्द क़रार दिया जैसा कि हिशाम इब्ने सालिम ने इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम से सवाल किया: इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम अफ़ज़ल हैं या इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम? इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: इमाम ह़सन अ़लैहिस्सलाम । रावी ने पूछा पस क्यों इमामत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की नस्ल में क़रार पाई? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

अल्लाह तआ़ला चाहता था कि मूसा और हारून की सुन्नत इमाम ह़सन और इमाम हुसैन अ़लैहेमस्सलाम के बारे में भी बाक़ी रहे। क्या तुम जानते हो कि मूसा और हारून दोनों पैग़म्बर थे जैसा कि ह़सनैन अ़लैहेमस्सलाम दोनों इमाम हैं? अल्लाह ने नबूवत को हज़रत हारून की औलाद में क़रार दिया न कि हज़रत मूसा की औलाद में, अगरचे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अफ़ज़ल-ओ-बरतर थे.....[२]

येह बात हर एक के लिए वाज़ेह है कि अइम्मए मअ्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम रूह़ानी त़ौर पर एक दूसरे से अफ़ज़ल नहीं हैं,अगरचे अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम के लिए रवायतों में बरतरी और फ़ज़ीलत दिखाई देती है।

---

[१] (अलज़ामुन्नास़िब, शैख़ ह़ाएरी यज़दी, स़.४७)

[२] (कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ्मा, शैख़ स़दूक़, स़.४२६)

इसीलिए इमाम ह़सन और इमाम हुसैन अ़लैहेमस्सलाम के लिए रूहानी अफ़ज़लीयत का सवाल पैदा नहीं होता है।

इसी त़रह़ सय्यदुश्शोहदा अ़लैहिस्सलाम के लिए जो रवायतों में वारिद हुआ है इससे एक क़िस्म का तअ़ल्लुक़ इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की शहादत और इमामत उनकी औलाद में होने के बारे में पाया जाता है। इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम **पैग़म्बरे अकरम** स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **पर नाज़िल हुए और फ़रमाया: ऐ मोह़म्मद! अल्लाह तआ़ला आपको फ़ातेमा** सलामुल्लाह अ़लैहा **से एक मुबारक बच्चे की बशारत देता है, और उसको आपके बअ़्द आपकी उम्मत शहीद करेगी। पैग़म्बरे अकरम** स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने फ़रमाया: ऐ जिब्रईल! मेरे ख़ालिक़ को पहुँचा दो और कह दो मुझे ऐसे बच्चे की ज़रूरत नहीं है।**

जिब्रईल आसमान पर चले गए और फिर नाज़िल हुए और इसी बात को दोहराया, और फिर यही जवाब मिला, फिर नाज़िल हुए और फ़रमाया: आपका पालने वाला आपको सलाम कहलवा रहा है और आपको बशारत दे रहा है कि इस बच्चे की ज़ुर्रीयत में इमामत, वेलायत और वेस़ायत क़रार देगा। पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने फ़रमाया पस मैं राज़ी हूँ।**

उसके बअ़्द पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने ख़बर को ह़ज़रत ज़हरा** सलामुल्लाह अ़लैहा **को पहुँचाया, और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे बशारत दी है कि अल्लाह तुम्हें एक बच्चा देगा और मेरी उम्मत मेरे बअ़्द**

उसको शहीद कर देगी हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा **ने पैग़म्बरे अकरम** स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **की ख़िदमत में पैग़ाम भेजा, मुझे ऐसे बच्चे की ज़रूरत नहीं है जिसे आपकी उम्मत आपके बअ़्द क़त्ल कर दे।**

दोबारा पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने किसी से हज़रत ज़हरा** सलामुल्लाह अ़लैहा **को येह पैग़ाम भेजा और फ़रमाया अल्लाह तआ़ला उस बच्चे की ज़ुर्रीयत में इमामत-ओ-वेलायत और वेस़ायत क़रार देगा उस वक़्त हज़रत ज़हरा** सलामुल्लाह अ़लैहा **ने अपनी ख़ुशनूदी का इज़हार किया।**[१]

इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने येह भी फ़रमाया:

अल्लाह ने इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम **की शहादत की वजह से येह इन्आ़म दिया है कि: इमामत को इमाम की ज़ुर्रीयत में क़रार दिया और इमाम की तुरबत में शेफ़ा क़रार दिया और दुआ़ इमाम की क़ब्र पर क़बूल होगी.....**[२]

---

[१] (उसूले काफ़ी, शैख़ कुलैनी, जि.१, स़.४६४)

[२] (अल-अमाली, शैख़ तूसी, स़.३१७)

सवाल ४

कैसे इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम पाँच साल की उ़म्र में रहबरी और इमामत की पूरी स़लाह़ियत रखते हैं?

जवाब:

जैसा कि इस्लामी ह़दीसों में आया है, इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम अपने वालिद बुज़ुर्गवार इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बअ़्द बिला फ़ास़ला मुसलमानों के पेशवा और इमामत की ज़िम्मेदारी इमाम के काँधों पर आ गई। यअ़्नी अभी पाँच साल ही हुए थे कि मुसलमानों की इमामत इमाम के काँधों पर आ गई। और इमाम अ़लैहिस्सलाम के पास वोह तमाम स़लाह़ियतें थीं जो इमामत के लिए ज़रूरी और लाज़िम होती हैं। इसलिए कि वोह इमाम जो बचपन में मुसलमानों की रहबरी के लिए रूह़ी और फ़िक्री स़लाह़ियत रखता है और मुसलमानों ने अपनी तमाम तर इज़्तेराब-ओ-बेचैनी के बावजूद अपने आप को उनकी दोस्ती और पैरवी के लिए वक़्फ़ कर दिया है यक़ीनन उसे वसीअ़् इल्म और आगाही की ज़रूरत है क़ुरआन का मोअ़ल्लिम होना चाहिए इसलिए कि उसके बग़ैर लोगों को अपनी पैरवी की त़रफ़ राग़िब नहीं कर सकता है।

हाँ यक़ीनन अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम ऐसे रुत़्बे पर फ़ाएज़ थे कि उनके छोटे, बड़े, मानने वाले सब के सब उनके वजूद से सौ फ़ीस़द फ़ैज़याब हो सकते थे और अपने आप को कामियाब बना सकते थे। फिर क्या येह मुम्किन है कि ऐसा बच्चा लोगों को अपनी इमामत की त़रफ़ दअ़्वत दे और येह

दअ्वत हमेशा लोगों को देता रहे और लोग भी ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर उनसे वाबस्ता होते रहें यहाँ तक कि इस रास्ते में अपनी जान-ओ-माल की भी फ़िक्र न करें। लेकिन कैसे अपने इमाम के शब रोज़ से आगाह न हों, और "इमामत और बचपन में रहबरी" का मसअला लोगों को हक़ीक़त की जुस्तुजू और बच्चे की इमामत के बारे में तहक़ीक़ और सवाल-ओ-जवाब का सवाल नहीं है? क्या येह मुम्किन है कि अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम का मौक़िफ़ और इमाम का लोगों के साथ हमेशा तअ़ल्लुक़ होने के बावजूद हक़ीक़त से पर्दा न उठे और इमाम अ़लैहिस्सलाम की फ़िक्र और इल्म - चाहे लड़कपन में हो या बुज़ुर्गी का हो - वाज़ेह और रोशन न हो?

अगर बफ़र्ज़े मुहाल हम मान लें कि लोग हक़ीक़त को नहीं समझे तो क्यों हुकूमत और बादशाहे वक़्त इतनी दुश्मनी होने के बावजूद इमामे वक़्त के ख़ेलाफ़ खड़े न हुए और इमाम के बचपन पर एअ़्तेराज़ नहीं किया और हक़ीक़त से पर्दा उठाने की कोशिश नहीं किया? क्या उनके लिए येह मुम्किन नहीं था? अगर इमाम अ़लैहिस्सलाम भी दूसरे बच्चों की तरह होते और उनके भी सोचने का अंदाज़ सतही होता और वाक़ेअन वसीअ् इल्म न होता, तो दुश्मनाने इमाम और हुकूमते वक़्त के लिए यही बेहतरीन हरबा होता कि वोह इमाम की सलाहियत और क़ाबिलीयत की तरफ़ उंगली उठाते और शीओं के ऊपर एअ़्तेराज़ करते, और आसमानी सितारों के ऊपर एअ़्तेराज़ करते? क्योंकि जब चालीस, पचास साल का बुज़ुर्ग इन्सान जो अपने ज़माने का बहुत ज़्यादा इल्मी और दूसरी चीज़ों का तजरेबा रखता है अगर उसके निकम्मेपन को साबित कर दिया जाए तो आ़म लोग उसको बर्दाश्त नहीं कर सकते तो अगर एक बच्चे के बारे में इस तरह का एअ़्तेराज़ किया जाए जो आ़म मुसलमानों की रहबरी कर रहा है तो उसके लिए और बड़ी मुश्किल होगी।

अगर इमाम, बचपन में वसीअ् इल्म-ओ-हुनर का मालिक न होता तो हुकूमते वक़्त बहुत आसानी से जन्जाल और इख़्तेलाफ़ पैदा कर सकते थे और लोगों को इमाम अ़लैहिस्सलाम से दूर कर सकते थे, लेकिन पूरी तारीख़ में उनका गहरा सुकूत इस बात का गवाह है कि बचपन में किसी का इमामे मअ्सूम होना एक ऐसी हक़ीक़त है जो इमामों की ज़िंदगी में वाक़ेअ् हुई है। हुकूमत और बादशाहे वक़्त भी उन बुर्ज़ुगों की इमामत की हक़ीक़त को समझते थे और इल्म-ओ-अ़मल के मैदान में उन्होंने देख लिया था और जानते थे कि अगर हम उनके बचपन का बहाना करना चाहें तो भी कामियाब नहीं होंगे। क्योंकि इमाम का बचपना होने के बावजूद चाहे सवाल-ओ-जवाब हो या किसी मुश्किल में फँस गए हों तो उससे निकलने का मसअला हो वोह कोई एक बात नहीं पेश कर सके जिससे इमामत के ऊपर कोई हर्फ़ आ सके।

ख़ुलासा:

बचपन में इमामत-ओ-रहबरी एक ऐसी हक़ीक़त है जो इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से पहले इमाम जवाद अ़लैहिस्सलाम और इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम को सात और आठ साल की उ़म्र में येह ज़िम्मेदारी हासिल हुई है। और इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के बारे में अपने कमाल तक पहुँच गई।

सवाल ५

क्या क्या मोअ्जेज़ात और करामतें इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से स़ादिर हुई हैं?

जवाब:

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से बहुत से मोअ्जेज़ात और करामतें स़ादिर हुई हैं और उसके बयान के लिए एक मुस्तक़िल किताब की ज़रूरत है। हम यहाँ पर कुछ मिसालें नमूने के त़ौर पर पेश करेंगे।

१. इराक़ के एक शख़्स़ ने इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के लिए कुछ पैसे भेजे। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने पैसा वापस कर दिया और पैग़ाम भेजा कि इस माल से अपने चचाज़ाद भाई का चार सौ दिरहम अलग कर लो। उस शख़्स़ के पास एक खेत था जिसमें उसका चचाज़ाद भाई शरीक था लेकिन उसके ह़क़ को येह नहीं अदा करता था और जब उसने ह़िसाब किया तो उसको मअ्लूम हुआ कि उसका हक़ चार सौ दिरहम होता था। जब उसने येह माल अलग कर लिया तो इमाम अ़लैहिस्सलाम ने उसके पैसे को क़बूल कर लिया।[१]

२. इब्ने शाज़ान कहते हैं: मेरे पास सह्मे इमाम अ़लैहिस्सलाम के चार सौ अस्सी दिरहम इकट्ठा हुए थे मैं नहीं चाहता था कि पाँच सौ से कम हो इसी लिए मैंने अपने पैसे से बीस दिरहम डाल दिया और (असदी) इमाम के वकील के पास भेज दिया। लेकिन मैंने नहीं लिखा कि उसमें कुछ पैसा मेरा है। जवाब लिखकर आया कि पाँच सौ दिरहम जिसमें

---

[१] (उसूले काफ़ी, शैख़ कुलैनी, जि.१, स़.५१७)

से बीस दिरहम तुम्हारा था मुझे मिल गया।[१]

३. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का एक मोअ्जेज़ा जो अभी ह़ाल ही में वाक़ेअ् हुआ है, आक़ाए मुत्तक़ी हमदानी की बीवी का है वोह कहते हैं: दोशम्बा के दिन माहे स़फ़र सन १३९७ हि. में मेरी बीवी मेरे दो जवान बच्चों का एक साथ शमीरान के पहाड़ से गिरकर फ़ौत हो जाने कि वजह से ग़म-ओ-अन्दोह की बेना पर कोमा में चली गई और डाक्टरों के मश्वरे के मुत़ाबिक़ हम इलाज और मोआ़लेजा में मशग़ूल हो गए लेकिन कुछ फ़ाएदा नहीं हुआ।

२२ स़फ़र शबे जुमआ़ यअ्नी इस हादसे के चार दिन बअ्द आक़ाए महदी काज़मी जो तेहरान के ताजिरों और मोह़्तरम लोगों में शुमार होते थे अपने भान्जे के साथ तेहरान से आए ताकि अपनी बहन को किराए की गाड़ी से इलाज के लिए तेहरान ले जाएँ। ग्यारह बजे रात को थकावट और ग़म से निढाल हो कर मैं अपने कमरे मे सोने के लिए चला गया अचानक ख़याल आया कि आज शबे जुमआ़ है, दुआ़ और मुनाजात की शब, तवस्सुल और राज़-ओ-नियाज़ करने की शब, उस रात कुछ आयतें और शबे जुमआ़ की मुख़्तस़र दुआ़ पढ़ने के बअ्द, इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से इस्तेग़ासा किया और दिल ग़म से भरा हुआ लेकर सो गया। सुब्ह चार बजे मअ्मूल के मुत़ाबिक़ उठा। अचानक मुझे एह़सास हुआ कि मेरी बीवी के कमरे से चीख़ने चिल्लाने और ज़ोर ज़ोर से बात करने की आवाज़ सुनाई दे रही है फिर थोड़ी और आवाज़ बलंद हुई और फिर सन्नाटा छा गया। मैंने सोचा कि मेहमान तेहरान से हमदान आ गए हैं इसलिए उस त़रफ़ ज़्यादा ध्यान नहीं दिया यहाँ तक कि सुब्ह की अज़ान की आवाज़ मेरे कानों से टकराई मैं वज़ू करने के लिए नीचे गया मैंने देखा कि आँगन की लाईट जल रही है और मेरी बड़ी बेटी जिसके होंटों पर मैंने भाईयों के

---

[१] (उसूले काफ़ी, शैख़ कुलैनी, जि.१, स़.५२३)

इंतेक़ाल के बअ्द से मुस्कुराहट नहीं देखी थी ख़ुशी ख़ुशी और मुस्कुराते हुए आँगन में चहल क़दमी कर रही है।

मैंने उससे पूछा: बेटा क्यों नहीं सो रही हो? उसने जवाब दिया: बाबा मुझे नींद नहीं आ रही है। मैंने पूछा क्यों? उसने जवाब दिया: इसलिए कि आधी रात के बअ्द चार बजे मेरी माँ को शेफ़ा दे दिया। मैं इंतेज़ार कर रही थी कि आप आएँ और मैं आपको ख़ुशख़बरी सुनाऊं। मैंने पूछा किसने शेफ़ा दिया? उसने जवाब दिया माँ ने रात चार बजे हमें बहुत बेचैनी से जगाया और कहा कि उठो आक़ा को जगाओ हम सब जाग गए हमने अचानक देखा कि माँ जो अपनी जगह से चल नहीं सकती थी उठी कमरे से बाहर आई मैं माँ के पीछे पीछे बाहर आई दरवाज़े के क़रीब मैं माँ के क़रीब पहुँच गई और मैंने कहा माँ कहाँ जा रही हैं? आक़ा कहाँ थे?

माँ ने जवाब दिया: एक आक़ा आ़लिम के लेबास में मेरे सरहाने आए और मुझसे कहा उठो। मैंने कहा मैं नहीं उठ सकती। बलंद आवाज़ से कहा उठो और अब दवा न खाओ और न रोओ। मैं उनकी हैबत से उठ खड़ी हुई। दोबारा मुझसे कहा कि दवा न खाओ और न गिरिया-ओ-ज़ारी करो। और जैसे ही उन्होंने दरवाज़े का रुख़ किया मैंने तुम लोगों को बेदार किया और कहा कि आक़ा का एह्तेराम करो और उनका इस्तेक़बाल करो। लेकिन तुमने बहुत देर से जुम्बिश की मैंने ख़ुद आक़ा का इस्तेक़बाल किया।

जब माँ मुतवज्जेह हुई कि दरवाज़े के क़रीब खड़े हैं तो माँ ने कहा: बेटा ज़हरा मैं ख़ाब देख रही हूँ या बेदार हूँ। मैं ख़ुद अपने पैरों से चलकर यहाँ आई हूँ? मैंने कहा माँ आक़ा ने आपको शेफ़ा दिया है और फिर मैं माँ को लेकर कमरे में आई।

हाँ! एक लफ़्ज़ "न रोओ" कहने से उसके दिल से ग़म-ओ-अन्दोह दूर हो गया।[१]

४. जलीलुल क़द्र आ़लिम शमसुद्दीन मोहम्मद इब्ने क़ारून बयान करते हैं कि एक शख़्स का नाम नज्म और लक़ब अस्वद था। फ़ुरात के किनारे दक़ूसा नामी गाँव में रहता था और नेक और अ़मले स़ालेह़ करने वाला शख़्स था। उसकी एक ज़ौजा थी जिस का नाम फ़ात़ेमा था वोह नेक और स़ालेह़ ख़ातून थी और उसके दो बच्चे थे।

इत्तेफ़ाक़न वोह और उसका शौहर नाबीना हो जाते हैं और बहुत परेशान होते हैं। येह वाक़ेआ़ ७१२ में रूनुमा हुआ मियाँ-बीवी एक त़ूलानी मुद्दत तक इसी ह़ालत में बसर करते हैं यहाँ तक कि एक रात उसकी बीवी ने एह़सास किया कि उसके चेहरे पर हाथ फेरा गया और कहने वाले ने उससे कहा: अल्लाह तआ़ला ने तेरी आँखों का नूर वापस कर दिया है, जाओ अपने शौहर के पास और उसकी ख़िदमत में कोताही न करना।

औ़रत ने आँख खोलकर देखा कि घर नूर से भरा हुआ है। वोह समझ गई कि आक़ा इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने शेफ़ा दिया है।[२]

---

[१] (शिफ़्तगाने इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम, स़.१७२)

[२] (बेह़ारुल अनवार, अ़ल्लामा मजलिसी, जि.५२, स़.७४)

सवाल ६

क्या पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने ग़ैबत के बारे में पहले से ख़बर दी थी?

जवाब:

ग़ैबत एक ऐसी ह़क़ीक़त है जिसके बारे में पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और मअ़्सूम इमामों ने पहले से लोगों को आगाह किया था और ग़ैबत वाक़ेअ़् हुई है। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत कोई ताज़ा वाक़ेआ नहीं है बल्कि इसकी बुनियाद दीन की जड़ों में पाई जाती है। मिसाल के त़ौर पर रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया: ख़ुदा की क़सम जिसने मुझे बशारत देने वाला नबी बनाकर भेजा। क़ाएम मेरे बेटों में अल्लाह से उस अह़्द के मुताबिक़ ग़ैबत इख़्तेयार करेगा और उसकी ग़ैबत कुछ इस त़रह़ होगी कि लोग कहने लगेंगे: अल्लाह तआ़ला को आले मोह़म्मद की ज़रूरत नहीं है और दूसरे ख़ुद उनकी वेलादत में शक करने लगेंगे। पस जिस शख़्स को ग़ैबत का ज़माना मिले उसे अपने दीन की ह़ेफ़ाज़त में कोशाँ रहना चाहिए और शैत़ान को शक के रास्ते से आने नहीं देना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि शैत़ान उसको मेरे दीन से बहका दे और मेरे दीन से बाहर निकाल दे बिल्कुल उसी त़रह़ जैसे उसने तुम्हारे माँ बाप को जन्नत से बाहर निकलवा

दिया। अल्लाह तआ़ला ने शैत़ान को काफ़िरों का दोस्त और रहनुमा क़रार दिया है।[१]

इसी त़रह़ अस़्बग़ इब्ने नुबाता नक़्ल करते है: अमीरुल मोअ्मेनीन अ़लैहिस्सलाम इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम को याद करते हैं और फ़रमाते हैं: जान लो वोह इस त़रह़ ग़ैबत इख़्तेयार करेंगे कि नादान लोग कहने लगेंगे अल्लाह तआ़ला को आले मोह़म्मद की ज़रूरत नहीं है।[२]

इसके अ़लावा बहुत सी ह़दीसें, ह़दीसों की किताब में मशहूर हैं।

---

[१] (इस्बातुल हुदा, शैख़ हुर्रे आ़मेली, जि.६, स़.३८६)

[२] (इस्बातुल हुदा, शैख़ हुर्रे आ़मेली, जि.६, स़.३९३)

सवाल ७

ग़ैबते सुग़रा और ग़ैबते कुबरा का क्या मअ़्ना है और उसका आग़ाज़ कब हुआ?

जवाब:

शीओं के ग्यारहवें इमाम हज़रत इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम का २६० हिजरी में इन्तेक़ाल हो गया। अल्लाह तआ़ला के हुक्म से इमामत-ओ-रहबरी की ज़िम्मेदारी उनके फ़र्ज़न्द हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम को मुन्तक़िल हो गई। इमाम के दुश्मनों ने इमाम अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल का पूरा इरादा कर लिया था।

इसी वजह से इमाम ने अपने वालिद बुज़ुर्गवार को दफ़्न करने के बअ़्द अल्लाह के हुक्म से सरदाबे मुक़द्दस से ग़ैबत इख़्तेयार किया।

इमाम की ग़ैबत दो हिस्सों में तक़सीम की जा सकती है: ग़ैबते सुग़रा को ग़ैबते सुग़रा इसलिए कहा जाता है कि येह मुख़्तसर मुद्दत के लिए थी जिसका आग़ाज़ २६० हिजरी से हुआ जिस साल इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम का इन्तेक़ाल हुआ और ३२९ हिजरी जिस साल इमाम के आख़री नाएब का इन्तेक़ाल हुआ उस वक़्त से ग़ैबते कुबरा का आग़ाज़ हुआ। इस ग़ैबत में दो चीज़ें ख़ास़ तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं। १. ज़माने के लेहाज़ से; २. फ़ाएदे के लेहाज़ से। ज़माने के लेहाज़ से चूँकि येह ग़ैबत तक़रीबन ७० साल (६९ साल ६ महीने और १५ दिन) थी। इसलिए इसको ग़ैबते सुग़रा कहा जाता है। और फ़ाएदे के लेहाज़ से चूँकि इस ग़ैबत में कुछ रास्ते खुले हुए थे यअ़्नी इसका दामन महदूद था यअ़्नी इसके

बावजूद कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम नज़रों से पोशीदा थे लेकिन तमाम लोगों की नज़रों से ओझल नहीं थे बल्कि कुछ लोग थे जो ख़ास़ त़रीक़े से इमाम के राबेत़े में थे और येह ख़ास़ नाएबीन थे जो लोगों के काम अन्जाम देते थे और लोगों के सवालात और ख़ुतूत़ इमाम अ़लैहिस्सलाम को पहुँचाते थे या ले जाते थे और इमाम अ़लैहिस्सलाम का जवाब लोगों तक पहुँचाते थे और कभी कुछ ख़ास़ गिरोह और लोग इन्हीं नाएबीन के ज़रीए़ इमाम अ़लैहिस्सलाम की बारगाह तक पहुँचते थे।[१]

अलबत्ता बअ़्ज़ मुवर्रिख़ ग़ैबते सुग़रा का आग़ाज़ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की वेलादत के वक़्त को क़रार देते हैं यअ़्नी २५५ हिजरी से शुरूआत होती है और ३२९ हिजरी पर ख़त्म होती है। इस ह़िसाब से ग़ैबते सुग़रा का ज़माना ७४ साल होता है। इस लेहाज़ से इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ग़ैबते सुग़रा के वक़्त ७४ साल के कामिल इन्सान थे लेकिन आख़री नाएब के गुज़रने के बअ़्द येह रास्ता लोगों के लिए बंद हो गया और फ़ुक़हाए इस्लाम और मराजेअ़् एज़ाम दीनी और दुनियावी उमूर में लोगों के लिए इमाम के आ़म नाएब शुमार होने लगे और चूँकि इमाम से राबेते के तमाम ख़ुसूसी ज़राएअ़् बंद हो गए थे और ग़ैबत का ज़माना त़ूलानी होने की वजह से इस ग़ैबत को ग़ैबते कुबरा कहा जाने लगा।

इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम इस सिलसिले मे फ़रमाते हैं:

> **ह़ज़रत क़ाएम अ़लैहिस्सलाम दो ग़ैबत रखते हैं। एक त़ूलानी यअ़्नी ग़ैबते कुबरा और दूसरी मुख़्तस़र यअ़्नी ग़ैबते सुग़रा।**[२]

---

[१] (ख़ुरशीदे मग़रिब, मोह़म्मद रज़ा ह़कीमी, स़.४३)

[२] (बेह़ारुल अनवार, अ़ल्लामा मजलिसी, जि.५२, स़.१५५)

सवाल ८

ग़ैबते कुबरा पर ग़ैबते सुग़रा का क्या असर और नक़्श है?

जवाब:

येह बात क़ाबिले ज़िक्र है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत वाक़ेअ् होने से पहले मअ्सूम इमामों ने ख़ास़ त़ौर से नवें इमाम के बअ्द इमामों ने ग़ैबत के लिए ज़मीन हमवार किया है।

इस मअ्ना में कि लोगों का इमामों के पास आना जाना बहुत कम था इसलिए कि इमाम हादी अ़लैहिस्सलाम और इमाम ह़सन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम हुकूमते वक़्त की त़रफ़ से शिद्दत से निगरानी में थे और आ़म लोगों का इमामों से मिलना मम्नूअ् था। और दूसरी त़रफ़ से येह दो इमाम सिवाए ख़ास़ दोस्तों और उन लोगों के जो अपनी मुश्किलाते दीनी और दुनियवी के ह़ल के लिए इमामों के पास आते थे, बहुत कम लोगों के साथ उठते बैठते थे।

इसलिए कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत का ज़माना क़रीब था और लोगों के लिए ज़रूरी था कि इस त़रह़ की आ़दत कर लें सियासी लेहाज़ से और अपने मुश्किलात के लेहाज़ से। अपने उन बुज़ुर्गों से मुराजेआ़ करें जो दीन और मज़हब की ह़ेफ़ाज़त करने वाले थे और ग़ैबत में अपने आप को हैरान और परेशान न पाएँ। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम भी अपने आप को लोगों से दूर रखते थे ताकि लोग ग़ैबते कुबरा के लिए आमादा हो जाएँ।

हक़ीक़त में "ग़ैबते सुग़रा" ग़ैबते कुबरा का मुक़द्दमा और उसके लिए ज़मीन हमवार करना थी। और अगर अचानक यकबारगी ग़ैबते कुबरा वाक़ेअ् हो जाती तो लोगों के तअ़ज्जुब का सबब और बअ़्ज़ लोगों के इन्कार की वजह बन जाती और लोगों के लिए गुमराही का सबब क़रार पाती। और लोगों के लिए अपने इमाम से बिल्कुल नाता टूटना ग़ैबते कुबरा में दुश्वार हो जाता।

लेकिन इमाम अ़लैहिस्सलाम ने ७० साल ग़ैबते सुग़रा में अपने ख़ास़ नाएबों के ज़रीए़ राबेता रखा यहाँ तक कि बअ़्ज़ लोगों को ज़ेयारत की इजाज़त भी दिया ताकि धीरे धीरे लोग ग़ैबते कुबरा से आशना और मानूस हो जाएँ।

इस त़रह़ इस सवाल का जवाब मअ़्लूम हो गया कि क्यों इमाम के लिए दो ग़ैबतें हुईं और क्यों शुरूअ़् से ग़ैबते कुबरा का आग़ाज़ नहीं हुआ।

सवाल ९

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत की वजह क्या है?

जवाब:

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत की वजूहात और अस्बाब जानने से पहले ज़रूरी है कि येह बात जान लें कि रवायतों से पता चलता है कि ग़ैबत की वाक़ई और ह़क़ीक़ी वजह क्या है? इसका इ़ल्म इन्सान को नहीं है सिवाए अल्लाह और इमामे मअ़्सूम के, इसका मुकम्मल इ़ल्म किसी को नहीं है। जैसा कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने फ़ज़्ल हाशमी ने रवायत किया कि मैंने इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम से सुना कि इमाम फ़रमा रहे हैं:

> **स़ाहेबुल अम्र को एक ग़ैबत होगी और उसको बहरहाल होना है और वोह इस त़रह़ होगी कि बात़िल परस्त लोग शक-ओ-तरदीद में पड़ जाएंगे।**
>
> **रावी कहता है कि मैंने कहा: फ़र्ज़न्दे रसूलुल्लाह क्यों ग़ैबत होगी? इमाम ने फ़रमाया: उस वजह से जिसे हमें बताने की इजाजत नहीं है।**
>
> **रावी कहता है कि मैंनें कहा: उनकी ग़ैबत में क्या ह़िकमत है? इमाम ने फ़रमाया: वही ह़िकमत है जो उनसे पहले के सफ़ीरों और अल्लाह कि हुज्जत की थी। क़ाएम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत की ह़िकमत ज़ाहिर नहीं होगी सिवाए उनके आने के बअ़्द, बिल्कुल उसी त़रह़ जैसे जनाबे ख़िज़्र के ज़रीए कश्ती में**

सूराख़ करने और दीवार उठाने और बच्चे को क़त्ल करने की वजह ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिए ज़ाहिर नहीं हुई मगर उस वक़्त जब जुदाई का वक़्त आ गया।[१]

येह रवायत और इसी त़रह़ की रवायत से पता चलता है कि ग़ैबत की ह़क़ीक़ी वजह को बताया नहीं जा सकता और हर वोह इल्लत और वजह जो बयान होती है अगरचे वोह इल्लत और वजह हो सकती है लेकिन ह़क़ीक़ी वजह नहीं हो सकती है।

लेकिन इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत की जिन वजहों को हम रवायत से बयान कर सकते हैं वोह इस त़रह़ हैं:

१. इम्तेह़ान और आज़्माइश

इमाम की ग़ैबत की वजह से जो नेफ़ाक़ पोशीदा है वोह ज़ाहिर हो जाए ताकि चाहने वालों की ह़क़ीक़ी मोह़ब्बत और इमाम के ह़क़ीक़ी शीआ़ इमाम की ख़ालिस वेलायत से लबरेज़ होकर उनसे जुदा हो जाए जो नेफ़ाक़ का चेहरा पहने हुए हैं और ज़ाहिरन इमाम की वेलायत का दम भरते हैं। दूसरे लफ़्ज़ों में मोअ्मिन, मुनाफ़िक़ से जुदा हो जाए।

जअ्फ़र जोअ्फ़ी कहते हैं मैंने इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया आपका ज़हूर कब होगा? इमाम ने फ़रमाया:

अफ़सोस अफ़सोस! ज़हूर उस वक़्त तक नहीं होगा जब तक ख़ालिस़ न हो जाओ (इमाम ने येह जुम्ला तीन बार तकरार किया) और फ़ासिद और गुनाहों में डूबे अफ़राद चले जाएँ और पाक-ओ-पाकीज़ा अफ़राद बाकी बचें।[२]

---

[१] (कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, शैख़ स़दूक़, स़.४८२)

[२] (बेहारुल अनवार, अ़ल्लामा मजलिसी, जि.५१, स़.११३)

इमाम मूसा इब्ने जअ्फ़र अ़लैहेमस्सलाम ने फ़रमाया:

जब सातवें इमाम का पाँचवां बेटा ग़ैबत इख़्तेयार करे तो तुम अपने दीन के बारे में होशियार रहना।

कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें कोई दीन से बाहर निकाल दे! ऐ मेरे बेटे! स़ाहेबुल अम्र यक़ीनन ग़ैबत इख़्तेयार करेंगे कि बअ़्ज़ मोअ्मेनीन अपने दीन से पलट जाएंगे। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ग़ैबत के ज़रीए़ अपने बन्दों का इम्तेहान लेगा।[१]

२. ज़ालिम और सितमगरों के हाथों पर बैअ़त न करना

मुतअ़द्दिद रवायतों में ग़ैबत की एक वजह किसी से बैअ़त न करना बताया गया है। ह़सन इब्ने फ़ुज़्ज़ाल कहते हैं: अ़ली इब्ने मूसा अ़लैहेमस्सलाम ने फ़रमाया:

गोया मैं अपने शीओं को देख रहा हूँ कि मेरे तीसरे फ़र्ज़न्द (इमाम ह़सन अ़सकरी अलैहिस्सलाम) के बअ़्द अपने इमाम की तलाश में इधर उधर भटक रहे हैं लेकिन वोह उसको नहीं पाएंगे।

रावी कहता है मैंने अर्ज़ किया किस दलील से? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: क्योंकि वोह नज़रों से ओझल होंगे।

रावी कहता है मैंने अर्ज़ किया क्यों नज़रों से ओझल होंगे? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: इसलिए कि जब वोह तलवार लेकर क़याम करे तो उनकी गर्दन में किसी की बैअ़त न हो।[२]

---

[१] (बेहारुल अनवार, अ़ल्लामा मजलिसी, जि.५१, स़.११३)

[२] (बेहारुल अनवार, अ़ल्लामा मजलिसी, जि.५१, स़.१५२)

३. दुश्मनों से गज़न्द का ख़ौफ़

इमाम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश से तमाम सितमगर और ज़ालिम वह़शत ज़दा हो गए और चूँकि अपनी मौत और ज़ालिम हुकूमत की बीख़कुनी और ग़ैर इन्सानी अ़मल का मुँह तोड़ जवाब इमाम अ़लैहिस्सलाम के तवाना हाथों से होगा येह वोह लोग जानते थे और जानते हैं। लेहाज़ा इमाम अ़लैहिस्सलाम की जान का ख़तरा था। इसी वजह से ग़ैबत की एक वजह इमाम की जान के ख़तरे को क़रार दिया गया है जैसा कि ज़ोरारा इब्ने अअ़्युन इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम से रवायत करते हैं कि इमाम ने फ़रमाया:

> **ऐ ज़ोरारा! हमारा क़ाएम ग़ैबत में जाने के लिए नागुज़ीर है। मैंने कहा: वोह किस लिए? इमाम ने फ़रमाया: अपनी जान के ख़ौफ़ और डर से फिर इमाम ने अपने हाथ से अपने शिकम की त़रफ़ इशारा किया।**[१]

अलबत्ता येह बातें अल्लाह के न चाहने की बेना पर और ह़ज़रत के ज़हूर के लिए है वरना इमाम अपने अज्दाद की त़रह़ अल्लाह की राह में क़त्ल होने से नहीं डरते। शैख़ तूसी रह़्मतुल्लाह अ़लैहे लिखते हैं: ह़ज़रत के ज़हूर में कोई चीज़ रुकावट नहीं है सिवाए येह कि वोह क़त्ल होने से डरते हैं इसलिए कि अगर इसके अलावा कुछ और होता तो इमाम का पोशीदा होना जाएज़ न होता बल्कि इमाम ज़ाहिर हो जाते और हर क़िस्म की परेशानी और ज़ह़मत को बर्दाश्त करते। इसलिए कि अम्बिया और औलिया या मअ़्सूम इमाम अल्लाह की राह में सख़्तियाँ और मुसीबतें बर्दाश्त करने में नहीं हिचकिचाते।[२]

---

[१] (कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, शैख़ स़दूक़, स़.३४२)

[२] (महदिए मौऊ़द, तर्जुमा-ओ-निगारिश अ़ली दवानी, स़.८५२)

सवाल १०

क्या ज़िद है कि इमामे मअ़्सूम सिर्फ़ बारह हों ताकि ज़रूरत हो कि अल्लाह क़ानूने त़बीअ़त को बारहवें इमाम के लिए तोड़ दे?

जवाब:

शीओं के बुनियादी अ़क़ाएद में से एक इमामत का अ़क़ीदा है। इमामत नबूवत का एदामा है जिसके बग़ैर एलाही मक़सद इन्सान की कामियाबी और उसको उसके मक़ाम तक पहुँचाना और रेज़ाये एलाही और अल्लाह की क़ुरबत ह़ासिल करना मुम्किन नहीं है। इमाम इन्सानों में इन्साने कामिल है और वोह माद्दी दुनिया और आ़लमे रब्बानी के दरमियान राबेत़ा है। इस्लामी ह़दीसों के मुत़ाबिक़ अगर इमाम और हुज्जते ख़ुदा न हो तो इन्सान और ज़मीन तबाह-ओ-बरबाद हो जाएगी। इमाम सज्जाद अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

> **हम मुसलमानों के पेशवा, और दुनिया पर अल्लाह की हुज्जत, मोअ्मीन के सरदार, और हर नेक इन्सान के रहबर और मुसलमानों के उमूर के मालिक हैं। हम ज़मीन के लिए सुकून-ओ-आराम का सबब हैं बिल्कुल उसी त़रह़ जैसे सितारे आसमान के लिए अमान का स़बब हैं। हमारी वजह से आसमान ज़मीन पर नहीं गिर रहा है उस वक़्त तक जब तक अल्लाह न चाहे। हमारी वजह से अल्लाह की रह़मत, बारिश नाज़िल होती है और ज़मीन से बरकतें निकलती हैं। अगर हम**

रूए ज़मीन पर न होते तो ज़मीन अपने ऊपर रहने वालों को निगल जाती।

फिर इमाम ने फ़रमाया:

उस दिन से जिस दिन अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम **को पैदा किया और आज तक ज़मीन कभी हुज्जते ख़ुदा से ख़ाली नहीं रही। चाहे वोह हुज्जत ज़ाहिर और लोगों के सामने हो या फिर ग़ाएब और छिपी हुई हो और क़यामत तक ख़ाली नहीं रहेगी और अगर इस त़रह़ होता तो अल्लाह की इबादत-ओ-परस्तिश नहीं होती.....**[१]

इस मुख़्तस़र से मुक़द्दमे के बअ्द उस मसअले को बयान करेंगे जो अल्लाह के इरादे और मशीयत से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। और वोह येह है कि: क्यों इमामों की तअ़्दाद बारह से ज़्यादा नहीं है? येह बात जानना ज़रूरी है कि इमामत का मसअला एक लम्हे के लिए भी छोड़ा नहीं गया है इस मअ़्ना में कि जब भी कोई इमाम इस दुनिया से जाता था या शहादत हो जाती थी दूसरा इमाम उसकी जगह ले लेता था। इस लिए कि थोड़ी सी मुद्दत के लिए ही सही अगर इमामत को छोड़ दिया गया होता तो आइन्दा इमामत के बारे में शुब्हात पैदा होने लगते और एलाही मक़स़द वाक़ई ख़त़रात का शिकार हो जाता और दूसरी त़रफ़ से लोगों के ज़ेह्नों में त़रह़ त़रह़ के सवालात, लोगों में बेचैनी और इज़्त़ेराब, गुमराही और फ़साद, त़रह़ त़रह़ की बात़िल बातें दीने इस्लाम में हक़ और हक़ीक़त की राह में आ जातीं। इसी त़रह़ उन फ़ुरस़त त़लब अफ़राद को और ख़ाहिशों में डूबे और झूठे दअ़्वे करने वाले अफ़राद को मौक़अ़् मिल जाता कि वोह लोगों को गुमराह और ज़मीन से खिलवाड़, बिदअतें अन्जाम देना और ह़क़ को

---

[१] (यनाबीउ़ल मवद्दा, क़ुन्दूज़ी, जि.३, स़.१४७)

बरबाद करने की फ़िक्र में लग जाएँ। ताकि इस रास्ते तक पहुँचना ना मुम्किन और मुह़ाल हो जाए।

दूसरी त़रफ़ से जब ज़ालिम हुक्मराँ येह एह़सास करते थे कि कोई है जो उनको रोक सकता है और लोगों पर ज़ुल्म-ओ-सितम नहीं होने देगा और वोह उन लोगों को तबाह-ओ-बरबाद करने की पूरी स़लाहियत रखता है तो उसको रास्ते से हटाने के लिए हर त़रह़ की साज़िश करने से नहीं हिचकिचाते। तमाम अम्बिया की जेहाद की राह में कोशिशें और तमाम औस़िया और अच्छे लोगों की ज़ह़मतें जो अल्लाह की राह में अन्जाम दी गई थीं इस त़रह़ उजाड़ देना चाहते थे कि गोया इस त़रह़ की कोई चीज़ थी ही नहीं।

इस मक़स़द के लिए और उन बातों को देखते हुए जो पहले बयान की गईं और दूसरी मस़्लेह़त जो इमामत के लिए पाई जाती थी सबब हुई कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने एक रवायत में इमाम की तअ़्दाद और उनके नाम एक के बअ़्द एक बयान किया जिस में पहले इमाम अ़ली अ़लैहिस्सलाम और आख़री इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम हैं।

हाँ अल्लाह की ह़िकमत का तक़ाज़ा येह है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की उ़म्र इस क़द्र त़ूलानी हो कि दुनिया कि इस़्लाह़ के लिए ज़मीन हमवार हो जाए। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का वजूद मुअ़य्यन और नस़्ले स़रीह़ की बेना पर इस्लामी दुनिया मह्दवीयत का झूठा दअ़्वा करने वालों से पाक और स़ाफ़ हो इस त़रह़ का झूठा दअ़्वा करने वाले हजारों लोग तारीख़ के दामन में मौजूद हैं लेकिन उन लोगों का दअ़्वा मुआशरे में बहुत ज़्यादा असर न कर सका। इसलिए इमामों की तअ़्दाद का बारह मुशख़्ख़स़ और मुअ़य्यन होना ज़रूरी था ताकि मुआशरे की ज़रूरत के ऐ़न मुत़ाबिक़ हो। अगर हम पैग़म्बर के बअ़्द का तीन स़दियों का ज़माना जिसमें इमामों ने ज़िंदगी बसर की है ग़ौर से मुत़ालेआ करें तो हम पाएंगे कि इस्लामी

मुआशरे ने वोह तमाम मक़ासिद ह़ासिल कर लिए हैं। और ज़िंदगी के तमाम शोअ्बों में तरक़्क़ी की है और शरीअत के तमाम अह़काम आम लोगों तक पहुँचे हैं।

हाँ, अगर इमाम अलैहिस्सलाम की ग़ैबत न हो तो अमल के मौक़ेअ् और जेहादे इस्लामी और पैग़म्बरों की ज़हमतों और मुख़्लिस़ अफ़राद की फ़ेदा कारियों के नतीजे की ह़ेफ़ाज़त पूरी तारीख़ में धीरे धीरे कम होती जाएगी और न होने की हद तक पहुँच जाएगी।[१]

लेकिन इस बात का जवाब कि क्यों त़बीअत के क़ानून इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के लिए तोड़ दिए जाएँ तो इसका जवाब येह है कि येह पहली मर्तबा नहीं कि अल्लाह ने किसी फ़र्द के लिए जो उसकी हुकूमत तक़ाज़ा करती है त़बीअत के क़ानून तोड़ दिए हों। उस वक़्त जब ह़ज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया तो जनाब इब्राहीम को बचाने का तन्हा रास्ता त़बीअत के क़ानून को तोड़ना था। फिर आग को हुक्म दिया गया कि **"ह़ज़रत इब्राहीम के लिए सलामती के साथ ठंडी हो जाओ"** और इसी त़रह़ हुआ। दरिया जनाब मूसा अलैहिस्सलाम के लिए शिगाफ़्ता हुआ। रूमी येह न समझ सके कि जनाब ईसा अलैहिस्सलाम को गिरफ़्तार नहीं किया है बल्कि किसी और को गिरफ़्तार किया है। पैग़म्बरे अकरम स़ल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को घर में बहुत से क़ुरैश के लोगों ने मुह़ास़ेरा कर लिया और उन्होंने घंटों पैग़म्बर की घात में गुज़ारे ताकि पैग़म्बर पर चढ़ाई कर सकें लेकिन पैग़म्बर उनके दरमियान से बाहर चले गए और किसी ने पैग़म्बर को नहीं देखा क्योंकि अल्लाह पैग़म्बर को लोगों की आँखों से पोशीदा रखना चाहता है।

---

१ (जज़ीरए ख़िज़्रा -अफ़साना या ह़क़ीक़त? अल्लामा जअ्फ़र मुर्तज़ा आमेली, तर्जुमा सेपहरी, स़.३५)

इसीलिए जब भी किसी मस्लेहत के तहत हुज्जते ख़ुदा की हेफ़ाज़त का मसअला पेश आया अल्लाह ने अपने मिशन की हेफ़ाज़त के लिए क़ानूने त़बीअ़त को तोड़ कर उसकी हेफ़ाज़त की है। और अल्लाह का लुत्फ़ बंदों के शामिले ह़ाल हुआ है।

इसके बर ख़ेलाफ़ अगर किसी हुज्जते इलाही की तब्लीग़ का ज़माना पूरा हो गया और उसने अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा कर दिया है, तो क़ानूने त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ मौत और ज़िंदगी पूरी करते हैं या शहादत पाते हैं।

येह बात तअ़ज्जुब की है कि कुछ लोग इन तमाम बातों को यअ़्नी क़ानूने त़बीअ़त के टूटने को अपनी अपनी जगह मानते हैं लेकिन इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की उ़म्र त़ूलानी होने के मसअले में जब शीआ़ अ़क़ीदा का सामना करते हैं तो उन चीज़ों का इन्कार करते हैं। और तअ़ज्जुब से कहते हैं कि क्या येह मुम्किन है बल्कि कहते हैं कि येह काम आ़क़ेलाना नहीं हैं।

सवाल ११

क्या ह़र्ज था कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम आख़री ज़माने में पैदा होते ताकि ग़ैबत की ज़रूरत न होती?

जवाब:

इस सवाल का जवाब हम मुख़्तस़र त़ौर पर पेश करेंगे ताकि तकरार न हो:

१. मोअ़्तबर इस्लामी रवायतों से पता चलता है कि मशीयते इलाही के मुत़ाबिक़ मअ़्सूम इमामों की तअ़्दाद स़िर्फ़ और स़िर्फ़ बारह होगी। वोह तमाम के तमाम पैग़म्बर के ख़ानदान से होंगे और उनका आख़री इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम होंगे।

२. मोअ़्तबर रवायतों से पता चलता है कि मशीयते इलाही येह है कि ज़मीन अल्लाह की हुज्जत से ख़ाली न हो और अगर हुज्जते इलाही न हो तो ज़मीन और ज़मीन के रहने वाले हलाक और बरबाद हो जाएंगे।

३. हम जानते है कि ग्यारह्वें इमाम २६० हिजरी में सामर्रा शहर में अपनी जान अल्लाह के ह़वाले करते हैं और शहादत पाते हैं।

इन तीन बातों से नतीजा निकलता है कि अगर इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम अब तक पैदा न हुए होते तो २६० हिजरी से अब तक ११७७ साल हो चुके हैं। दुनिया और अह्ले दुनिया हुज्जते इलाही के बग़ैर रहते और येह बात उस बात के ख़ेलाफ़ है जो इसके पहले हमने बयान किया है।

सवाल १२

क्या ह़र्ज था कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ग़ाएब न होते और अल्लाह तआ़ला क़त्ल होने से उनकी ह़ेफ़ाज़त करता?

जवाब:

इस सवाल के जवाब में शैख़ तूसी रह़्मतुल्लाह अ़लैहे के जवाब पर इक्तेफ़ा करेंगे। वोह फ़रमाते हैं "वोह चीज़ जो बंदों की तकलीफ़ के ख़ेलाफ़ नहीं है वोह येह है कि अल्लाह ने लोगों को गुनाह और वाजेबात की मुख़ालेफ़त से मनअ् किया है डराया है और हुक्म दिया है कि उसके हुक्म की इत़ाअ़त करें और अल्लाह की हुज्जत की मदद करें और उसके सामने सरे तस्लीम ख़म करें! इन बातों का मुकल्लफ़ अल्लाह तआ़ला बनाएगा।

लेकिन हुज्जते ख़ुदा और बंदों के दरमियान जुदाई डालना बंदों की तकलीफ़ के ख़ेलाफ़ है और इससे वोह मक़स़द फ़ौत हो जाएगा इसलिए कि लोगों को तकलीफ़ देने का मक़स़द येह है कि लोग सवाब ह़ास़िल करें। अब अगर अल्लाह इमाम और लोगों के दरमियान जुदाई डाल दे तो येह ह़िकमते ख़ुदा के ख़ेलाफ़ होगा। इसके अ़लावा येह भी हो सकता है अगर अल्लाह इमाम अ़लैहिस्सलाम को क़त्ल से मह़फ़ूज़ रखने के लिए लोगों और इमाम के दरमियान रुकावट पैदा कर दे तो मुम्किन है कि लोगों के दरमियान एक ऐसी बुराई पैदा हो जाए जो अल्लाह के लिए अच्छी और नेक नहीं है।"[१]

---

१ (महदिए मौऊ़द, तर्जुमा-ओ-निगारिश अ़ली दवानी, स़.८५२)

सवाल १३

इमाम ग़ाएब, मुसलमानों के लिए क्या फ़ाएदेमंद हो सकता है? कहा जाता है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी एक इन्फ़ेरादी और ख़ुसूसी ज़िन्दगी है जब कि एक रहबर और पेशवा को लोगों और मुसलमानों के दरमियान होना चाहिए। ऐसी ह़ालत में हमें सवाल करने का ह़क़ है कि येह ग़ाएब इमाम लोगों के लिए क्या फ़ाएदा पहुँचा सकता है?

जवाब:

येह बात जानना ज़रूरी है कि इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत का येह मअ़्ना नहीं है कि इमाम का वजूद दिखाई नहीं दे सकता है और इमाम का वजूद ह़क़ीक़ी के बजाए ख़याली और तस़व्वुराती है। बल्कि इमाम भी एक त़बीई ज़िन्दगी और एक ह़क़ीक़ी वजूद रखता है और फ़र्क़ सिर्फ़ येह है कि इमाम की उ़म्र त़ूलानी है वरना इमाम अ़लैहिस्सलाम मआ़शरे के दरमियान इसी त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं लेकिन कि इमाम अ़लैहिस्सलाम को कोई पह़चानता नहीं है। जैसा कि येह बात आने वाली है।

इस बात की वज़ाहत के बअ्द कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का वजूद ह़क़ीक़ी है ख़याली नहीं है। इस बात से इन्कार नहीं है कि इमाम का लोगों के दरमियान होना लोगों के लिए ज़्यादा फ़ाएदेमंद है और उसकी बरकतें बहुत ज़्यादा हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि अगर इमाम हमारे सामने न हो तो उम्मते इस्लाम के लिए कोई फ़ाएदा और बरकत ही न हो बल्कि इमाम की शख़्सीयत कुछ इस त़रह़ है कि लोगों को इमाम ख़ुद अपनी त़रफ़ जज़्ब कर लेते हैं। वोह मुतअ़द्दिद ह़दीसें जो ग़ैबत में इमाम के वजूद के फ़ाएदे के सिलसिले में वारिद हुई हैं उनमें इमाम के वजूद के त़रह़ त़रह़ के फ़ाएदे बयान किए गए हैं उनमें से बअ़्ज़ की त़रफ़ इशारा करेंगे।

१. इमाम अ़लैहिस्सलाम नेअ़्मतें मिलने का ज़रीआ और ज़मीन के मह़फ़ूज़ रहने का सबब है: येह बात बयान की जा चुकी कि अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ज़मीन के लिए अम्न का सबब हैं अगर ज़मीन इन एलाही हुज्जतों से ख़ाली हो जाए तो ज़मीन के तमाम लोग ज़मीन के साथ हलाक-ओ-बरबाद हो जाएंगे। इसीलिए इमाम के वजूद की बरकतें बहुत हैं अब चाहे वोह ह़ाज़िर हो या ग़ाएब इससे फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

पैग़म्बरे अकरम ने इस राज़ को बेहतरीन अंदाज़ में बयान फ़रमाया है और इस सवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाया है कि ह़ज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम के वजूद का ग़ैबत के ज़माने में फ़ाएदा क्या है:

अय वल्लज़ी ब-अ़-सनी बिन्नुबूवते इन्नहुम लयन्तफ़ेऊ़ना बेही यस्तज़ीऊ़ना बेनूरे वेलायतेही फ़ी ग़ैबतेही कन्तेफ़ाइन्नासे बिश्शम्से व इन जल्ल-लहस्सह़ाबो

हाँ अल्लाह की क़सम जिस ने मुझे नबी बनाकर मबऊ़स किया है लोग उसके वजूद से इस त़रह़ फ़ाएदा उठाएंगे और

उसकी वेलायत के नूर से इस त़रह़ फ़ाएदा उठाएंगे जैसे सूरज से बादल की ओट में चले जाने के बअ़्द उठाते हैं।[१]

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम इस सिलसिले में फ़रमाते हैं:

जिस त़रह़ सूरज से बादलों की ओट में चले जाने के बअ़्द भी फ़ाएदा उठाया जाता है उसी त़रह़ ज़मानए ग़ैबत में मुझसे लोग फ़ाएदा उठाएंगे। यक़ीनन मैं ज़मीन के आराम और सुकून का सबब हूँ जैसे सितारे अह्ले आसमान के लिए अम्न का सबब हैं।[२]

२. अ़क़ीदए महदवीयत का मुसलमानों में असर:

इमामे ग़ाएब और अ़क़ीदए मह्दवीयत से मुसलमानों में आइन्दा से मुतअ़ल्लिक़ उम्मीद की एक किरन पाई जाती है और इमाम के ज़हूर से पाकीज़ा ज़िंदगी के लिए एक उम्मीद पैदा होती है। शीआ़ मुआ़शेरा अपने ज़िन्दा और शाहिद इमाम के वजूद के एअ़्तेक़ाद से हमेशा उस सफ़र से पलटने की उम्मीद करते हैं जिसके साथ हज़ारों क़ाफ़ेले के दिल होंगे।

अगरचे उस इमाम को अपने दरमियान नहीं पाते लेकिन ख़ुद को उससे जुदा भी नहीं समझते अगर उस इमाम का वजूद ख़ारजी न होता और इन्सानियत के दोस्त एक ऐसे इमाम की वेलादत और परवरिश की उम्मीद लगाए बैठे न होते तो ह़ालत बिल्कुल अलग होती थी।

हाँ इमामे ग़ाएब अ़लैहिस्सलाम हमेशा अपने शीओं के ह़ालात और परेशानियों से बाख़बर रहते हैं। इसी वजह से इमामे ज़माना

---

[१] (यनाबीउ़ल मवद्दा, कुन्दूज़ी, जि.३, स़. ४८५)

[२] (कमालुद्दीन व तमामुन्नेअ़्मा, शैख़ स़दूक़, स़.४८५)

अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले हमेशा इमाम के लुत्फ़-ओ-करम और इमाम की इनायत को ह़ासिल करने के लिए अ़ालमी ह़ालात को साज़गार बनाने की कोशिश करते हुए इमाम का इन्तेज़ार कर रहे हैं जैसा कि इमाम अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुद फ़रमाया है:

हम तुम्हारे काम की निगरानी और तुम्हारे ह़ालात की हमेशा ख़बर रखते हैं और इसमें कोताही नहीं करते और कभी तुम्हारी याद से ग़ाफ़िल नहीं रहते। पस तुम लोग तक़वए इलाही इख़्तेयार करो ताकि तुम्हारी त़रफ़ जो फ़ित्ना आता है हम उससे तुम्हें नजात दे दें।

३. दीने ख़ुदा और आईने इस्लाम की हेफ़ाज़त:

इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के वजूद और ग़ैबत का फ़ाएदा येह है कि इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के आ़शेक़ीन और इमामे अ़स्र के सिपाही ज़हूर की उम्मीद में दीन से देफ़ाअ़् करने के लिए आमादा होते रहें।

ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम इस सिलसिले में फ़रमाते हैं:

उस इमाम की बरकत से कुछ लोग दीन का देफ़ाअ़् और फ़ित्ना ख़त्म करने के लिए आमादा होंगे बिल्कुल उसी त़रह़ जैसे आहनगर के हाथ में तीर और तलवार तेज़ होते हैं उनकी आँखें कुरआन से रौशन और मुनव्वर हैं उनके कानों में तफ़सीर और कुरआन के मअ़ाना बताए जाते हैं और शब-ओ-रोज़ ह़िकमत और उ़लूमे इलाही से सेराब होते हैं।[१]

दूसरे और भी ग़ैबत में इमाम के वजूद का फ़ाएदा बताया गया है हम यहाँ पर सिर्फ़ इन्हीं तीन पर इक्तेफ़ा करते हैं।

---

[१] (नह़जुल बलाग़ा, सुब्ही स़ालेह़, ख़ुत्बा १५०, स़.२०८)

सवाल १४

क्यों इमामे ग़ाएब की तशबीह उस सूरज से दी गई है जो बादल के पीछे छिपा होता है?

जवाब:

हमने बहुत सी ह़दीस ज़िक्र की जिसमें इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया था:

> **जहाँ तक तअ़ल्लुक़ ग़ैबत में मुझसे फ़ाएदा उठाने का है उसकी मिसाल उस सूरज की है जब बादल उसको लोगों की नज़रों से छिपा लेता है। अब हम उन वजहों को ज़िक्र करेंगे जिन वजहों से इमाम की उस सूरज से तशबीह दी गई है जो बादल के पीछे छिप जाता है।**

१. जिस त़रह़ लोग सूरज के घने बादलों से निकलने का इन्तेज़ार करते हैं ताकि उसके वजूद से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाएदा उठाएँ, ग़ैबत में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के शीआ़ लम्ह़ा ब लम्ह़ा इमाम के वजूद का इन्तेज़ार कर रहे हैं और हरगिज़ उससे नाउम्मीद नहीं हैं और यही उम्मीद है जो उन्हें ज़िन्दगी के हर मरह़ले में कामियाब-ओ-कामरान करती है और शजाअ़त और बहादुरी और तह़रीक अ़त़ा करती है।

२. जो शख़्स इन तमाम आसार और बरकात और मोअ़्जेज़ात 'करामात' अह़ादीस और रवायतों के बावजूद इमाम के वजूद का इन्कार करते हैं वोह लोग उन लोगों की त़रह़ हैं जो सूरज के बादल में

चले जाने से सूरज का इन्कार करते हैं अगरचे सूरज के वजूद का सारी दुनिया को फ़ाएदा मिल रहा है।

३. हम जानते है कि सूरज की कुछ किरनें दिखाई देती है और जब येह सब यकजा होती हैं तो सात मशहूर रंग पैदा होता है और कुछ दिखाई न देने वाली किरनें होती हैं जिन्हे बनफ़्श किरनों के ऊपर और सुर्ख़ किरनों के नीचे का नाम दिया गया है उसी त़रह़ एक मअ़्सूम नबी या इमाम तशरीई तरबियत किरदार-ओ-गुफ़्तार से करने के अ़लावा तअ़्लीम-ओ-तरबियत से लोगों को फ़ैज़ पहुँचाता है इसी त़रह़ एक क़िस्म की रूह़ानी और मअ़्नवी तरबियत लोगों के दिलों और फ़िक्रों में करता है जिसको हम तकवीनी तरबियत कह सकते हैं। यहाँ पर अल्फ़ाज़ 'कलेमात' गुफ्तार-ओ-किरदार काम नहीं करता है बल्कि यहाँ पर तन्हा बात़िनी कशिश काम करती है। जैसा कि बअ़्ज़ अम्बिया और अ़ज़ीम रहनुमाओं के बारे में मिलता है कि बअ़्ज़ गुमराह और गुनाहों में डूबे अफ़राद को एक तवज्जोह से उनकी ज़िंदगी को बदल देते थे। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम का ग़ैबत में वजूद भी इस त़रह़ का असर रखता है जो अपने त़ाकतवर वजूद से दूर चले गए लोगों के दिलों को बदल देते हैं और उन्हें सीधे रास्ते की त़रफ़ हेदायत करते हैं।

४. जिस त़रह़ सूरज की किरनें खिड़कियों और दरवाज़ों से उतनी ही मेक़दार में घर में आती हैं जितना दरवाज़ा और घर की खिड़की वुस्अ़त रखते हैं और घर की बलन्दी जहाँ तक रुकावट बनती है वहीं तक सूरज की किरनें घर में चमकती हैं। इसी त़रह़ लोग भी इमाम के वजूद से उतना फ़ाएदा उठाते हैं जितना उनका वजूद ख़ाहिशाते नफ़्सानी से दूर और जितना दिल गुनाहों के ह़ेजाबात से दूर होता है।

५. सूरज चाहे जितना बादल के पीछे रहे लेकिन अपने नूर और रोशनी से दुनिया को मह़रूम नहीं करता है और बादल के पीछे रहते हुए भी आसमान को रोशन रखता है। इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम चाहे जितना पर्दए ग़ैबत में रहें लेकिन इमाम का नूर सारी दुनिया को मुनव्वर किए हुए है इसलिए कि अगर इमाम का नूर न होता तो मअ़्सूमीन की रवायत के मुत़ाबिक़ ज़मीन और अह्ले ज़मीन तबाह-ओ-बरबाद हो जाते। ख़ुलास़ा इमाम अ़लैहिस्सलाम ज़मीन के अम्न का सबब हैं।